पास भगवान गये और पूछने लगे 'साल ! साल ! तू मुझे क्यों तकलीफ देता है ?' साल ने कहा : "मैं आपको कहाँ तकलीफ देता हूँ?" भगवान बोले : "तू मेरे बच्चों को तकलीफ देता है, याने मुझे ही तकलीफ देता है।" साल पर उसका गहरा असर हुआ। इस घटना के बाद उसमें परिवर्तन हुआ, वह ईसा का भक्त बना और फिर उसका नाम साल से पाल हो गया। फिर पाल यूरोप में घूमा। वह ज्ञानी था। उसके कारण इसाई धर्म यूरोपभर में फैला।

ईसा के शिष्य तो अनपढ़ थे। मैं अनपढ़ नहीं हूँ। लेकिन उनको जो प्रेरणा थी, वही प्रेरणा मुझे घुमा रही है। जहाँ नया युग आरंभ होता है, वहाँ नयी प्रेरणा आती है। मैं नयी प्रेरणा लेकर ही आपके पास पहुँचा हूँ।

अनुकरण करनेवालों की दयनीय हालत

हमने इंग्लैंड का अनुकरण करके यहाँ भी वहाँकी जम्हूरियत लाने की कोशिश की है। लेकिन इंग्लैंड एक विकसित देश है और हम अभी अविकसित हैं। वहाँ अलग-अलग पार्टियाँ हैं, पर वे अपने देश का नुकसान किये बगैर काम कर सकती हैं और यहाँकी पार्टियाँ एक-दूसरे को तोड़ने का काम करती हैं, इससे देश की ताकत नहीं बन पाती। यह मैंने कश्मीर में बहुत अनुभव किया है। हिन्दुस्तान में जो स्वरूप है, वही यहाँ शुरू हुआ है। यहाँकी सब सियासी पार्टियाँ मुझसे मिलीं। मैंने उनसे साफ-साफ बातें कीं। पार्टीवालों को कई बार फटकारा और सुनाया भी। वे सुनते थे, अपनी गलती महसूस भी करते हैं, लेकिन उसे सुधार नहीं सकते हैं, ऐसी स्थिति है। इस हालत में देश का काम कैसे हो ? यही सब देख-सुनकर मैंने कहा है कि में पार्टी-पॉलिटिक्स छोड़कर आना होगा। सर्वोदय में आनेवाले चाहे थोड़े ही हों, लेकिन वे सच्चे और अच्छे हों तो बहुत काम हो सकता है।

आपका कर्तव्य

हम चाहते हैं, यहाँ ऐसे सर्वोदय-सेवक निकलें, जो घर-घर जायँ और बेजमीनों के लिए जमीन का छठा हिस्सा दान हासिल करें। वे लोगों से कहें कि गाँव में बेजमीन रहने देना हमारी तमद्दुन से खिलाफ है। इसलिए उन्हें उनका हक देना ही चाहिए। जहाँ-जहाँ सैलाब आया, वहाँ-वहाँ यह दूसरा सैलाब आने दीजिये। यह पुण्य का सैलाब है। यह सैलाब सिखा रहा है कि एक-दूसरे को मदद करो और मिल-जुलकर रहो तो आफत का मुकाबला कर सकोगे। यहाँ चारों ओर पहाड़ है। इसलिए बीच में पानी इकट्ठा होना लाजमी है। ऐसी स्थिति में गाँव-गाँव में लोग इकट्ठे होंगे तो लाभ होगा।

आज कुछ लोग शिकायत करते हैं कि सैलाब के कारण हमारा नुक्सान हुआ, पर हमें मदद नहीं मिल रही है। सरकार कहती है कि हम मनुष्यों के जरिये मदद पहुँचाते हैं। मदद ऊपर से आती है, परन्तु नीचे तक नहीं पहुँचती। इसलिए गाँववाले इकट्ठा होकर, मिल-जुलकर रहेंगे तो इस मदद का लाभ उठा सकेंगे।

हम कहते हैं कि 'भूदान' से दिल नरम होता है और ग्रामदान से दिल जुड़ता है। दिल सख्त हों तो जुड़ नहीं सकते हैं। इसलिए पहले दिल को मुलायम बनाना चाहिए। यही सुनाने के लिए हम घूम रहे हैं। यहाँ ग्राम-दान के लिए हवा अनुकूल है, इसमें हमें शक नहीं रह गया है। ◆◆

स्वामित्व समाज का हो, अभिक्रम व्यक्ति का

प्रश्नः—क्या व्यक्ति का स्वामित्व अच्छा है या समाज का स्वामित्व ?

उत्तरः—स्वामित्व समाज का रहे और अभिक्रम व्यक्ति का रहे। घर में एक मनुष्य अक्लवाला हो तो वह अपनी अक्ल का लाभ सभीको देता है। लेकिन आज समाज जिस हालत में है, उस हालत में लोग कहते हैं कि व्यक्ति के पास संपत्ति न रही तो उसका अभिक्रम नहीं रहेगा। मैं कहता हूँ कि 'प्रॉपर्टी' और 'प्रोप्रिएटी' को क्यों जोड़ते हो ? व्यक्तिगत सम्पत्ति न भी रही तो भी काम करना चाहिए, यही बात आज लोगों को समझानी है।

लोग कहते हैं कि श्री अरविन्द चालीस साल तक एक ही मकान में रहे। उनमें कितना निग्रह था ! मैं कहता हूँ कि उनमें क्या निग्रह था ? मैंने ऐसे कई लोग देखे हैं, जिन्होंने साठ साल तक घर नहीं छोड़ा। वे जिस घर में पैदा हुए, वहीं रहे और वहीं मरे। लेकिन श्री अरविन्द की विशेषता इसमें है कि उन्होंने वह एकाग्रता परमात्मा के लिए खर्च की। नहीं तो हिन्दुस्तान में अपना गाँव या घर न छोड़नेवाले कई लोग हैं। कोरापुट की एक सभा में हमने पूछा कि आपमें से कितने लोगों ने ट्रेन देखी है तो मालूम हुआ कि वहाँ उपस्थित एक हजार लोगों में से सिर्फ तेरह भाइयों ने ट्रेन देखी थी। जिस प्रामाणिकता से लोग अपने घर में काम करते हैं, उसी प्रामाणिकता सर्वोदय से श्री अरविन्द ने परमार्थ का काम किया, यही उनकी विशेषता है।

क्या यह जरूरी है कि मेरा खेत हो, तभी मैं काम करूँ ? मेरा खेत हो तो मैं कभी-कभी आलस भी कर सकता हूँ, लेकिन सामूहिक खेत बन जाय तो मैं सोचूँगा कि मैं काम करने नहीं गया तो अपने कर्तव्य में चूकूँगा। इसलिए मैं रोज जरूर काम पर जाऊँगा। हम अपनी यात्रा में रोज सुबह ठीक ४॥ बजे निकलते हैं। क्योंकि हम समझते हैं कि लोकसेवा के काम के लिए शरीर को हमेशा तैयार रखना चाहिए। अगर मेरे घर का काम होता तो ऐसी तैयारी की जरूरत न रहती। लेकिन सार्वजनिक कार्य में, पारमार्थिक कार्य में ज्यादा सतर्कता चाहिए।

हमने देखा है कि अक्सर माताएँ अकेली होती हैं। रसोई बनाने में आलस करती हैं। वे सोचती हैं कि अपने लिए क्या बनाना है ? थोड़ा-सा गुड़ और मूँगफली खा ली तो उनका काम हो गया। लेकिन वे बच्चे के लिए पूरी रसोई बनाती हैं। जिस तरह बच्चे के लिए काम करने में माँ का अभिक्रम है, वैसे ही समाज के लिए करने में भी है। आज वह बात नहीं है, यह सही है, लेकिन लोगों को ऐसा शिक्षण देना होगा। ◆

अनुक्रम

१. ध्यान, धर्म और साधना की··· कटरा ७ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६८७
२. मैं नरसमूह में रहनेवाले 'नारायण'··· दोमेल ८ सितम्बर '५९" ६८८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पताः गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in